24 सङ्कृतिः (12)

ननभनजननय (7-7-10) [इह ललितलता स्वरगिरिविरातिर्नन-भनजननयशोभा Jk. 2. 254] ललितलता.

ननररररर [नौ स्र्मेघमाला (रु = रषट्कम्) H. 2. 367] मेघमाला, भृङ्गाब्जनीलालका.

नभजभजभजर [अथ महामदनसायको नगणतस्त्रिधाभजगणौ रनैधनौ Jk 2. 256] महामदनसायक.

नयभतननस [न्यौ भ्तौ निसौ संभ्रान्ता (नि = नात्रिकम्) H. 2. 370] संभ्रान्ता.

भतनसभभनय (5-7-12) [भूतमुनीनैर्यतिरिह भतनाः स्भौ भनयाश्च यदि भवति तन्वी Chm. 2. 220] तन्वी.

भभभतननस [भितनिसा द्रुतलघुपदगतिः H. 2.369] द्रुतलघुपद-गति, स्खलित.

भभभभभभभभ [नाम किरीटमिदं भगणा यदि पिङ्गलनागमुनीन्द्रमतं किल Chm. 2. 221] किरीट, सुभद्र.

भमसभननय (5-5-8-6) [हंसपदं स्याद्धाच्च गणाः स्युर्नेत-शरवसुयति मसभनना न्यौ Jk. 2. 255] हंसपद.

मभयमनभनस (8-8-8) [वेश्याप्रीतिः मभयमनभनसयुक्ताऽहि-फणिगजैश्छिन्ना Mm. 19. 26] वेश्याप्रीति.

मसजसततभर [म्सौ ज्सौ तौ भ्रौ विभ्रमगतिः H. 2. 371] विभ्रमगति.

रररररररर (8-8-8) [स्वैरिणीक्रीडनं प्रोक्तमष्टभी रगणैर्युतम् Mm. 19. 25] स्वैरिणीक्रीडन.

ससससससससस (8-8-8) [सगणैरिह वृत्तवरं वसुभिः किल दुर्मिलमुक्तमिदं कविभिः Chm. 2. 222] घोटक, दुर्मिल.

25 अतिकृतिः (6)

तयभभननननग (10-15) [त्यौ भौ नी (न-चतुष्कम्) गौ हंसपदा नैः (दशभिः) H. 2. 374] हंसपदा.

नजजयननननग [नृजज्या नीगौ चपलम् H. 2. 375] चपल.

ननननसभभभग (8-7-10) [अभिकृतिभवमिति गतिन-स-पुर-भग् हंसलयं भुजगाद्रियतिः Jk. 2. 257] हंसलय.

भमसभनननग (5-5-8-7) [क्रौञ्चपदा स्याद् भो मसभाश्चेदिषु-शरवसुमुनियतिरिनलघुगैः Chm. 2. 223 or क्रौञ्चपदं भात् किंच मसौ भ्नौ त्रिनगणगुरुशरशरवसुयतयः Jk. 2. 258] क्रौञ्चपद-दा.

मममममतयमग (4-4-5-12) [मन्तेभाख्यं मौ मौ मात् त्यौ मश्चान्ते गः स्याद् विश्रामोऽब्धौ चतुरस्मिन् बाणेऽप्येवम् Jk. 2. 259] मन्तेभ.

सजनजभनरनग (8-8-9) [कलकण्ठाख्यं सजनजभनरनगाश्चाहि-भोगिनिधिभिन्ना Mm. 19. 27] कलकण्ठ.

26 उत्कृतिः (12)

नजनसभनननलग [न्जौ न्सौ भनिल्गा वेगवती H. 2. 379] वेगवती.

नजभजजजभजलग (14-12) [मनुविरातिर्नजौ भजगणत्रितयं भजला गुरुर्यदि सुधाकलशः Jk. 2. 264] सुधाकलश.

नननननननगग (8-8-10) [वसुवसुयतिरथ गुरुयुगपरवसु-नयुगिति वनलतिका स्यात् Jk. 2. 262] वनलतिका.

नयनयननननगग (6-6-8-6) [नयनयनात्त्रयमपि गौ चेद्रसरस-वसुयतिरिति मकरन्दम् Jk. 2. 263] मकरन्द.

भनजनसननभगग (7-7-7-5) [भ्नज्नस्नन्भगगैर्वार्वार्वेषुभिदि रञ्जनम् Mm. 20. 2] रञ्जन.

भननसमनननलग { (13-13) [भो नौ स्मौ निल्गा आपीडो डैः H. 2. 378] आपीड.
(14-12) [-do-Rm. 7. 30] }

मनननननसगग (9-6-6-5) [मो नाः षट् सगगिति यदि नव-रसरसशरयतियुतमपवाहाख्यम् Chm. 2. 225] अपवाह.

ममतनननरसलग (8-11-7) [वस्वीशाश्वैश्छेदोपेतं ममतननयुग-रसलगैः भुजङ्गविजृम्भितम् Chm. 2. 224] भुजङ्ग-विजृम्भित.

मयनतननरयलग (8-11-7) [म्यौ न्तौ नौ रयौ लगौ यदि चाहुर्वसुमदनदहनर्षिभिर्भुजङ्गेरितम् Vr. 3. 106. 2] भुजङ्गेरित.

मयनतननरसलग (8-11-7) [म्यौ न्तौ नौ रसौ ल्गौ यदि च आहुर्वसुमदनदहनर्षिभिर्भुजङ्गेरितम् Vr. 3. 106. 1] भुजङ्गेरित.

यययययययलग [चेटीगतिश्च गायत्री या लगौ छिदिनैर्मृगैः Mm. 20. 1] चेटीगति.

ननभनजननगल (9-7-10) [यस्यां नकारयुगलं परतो भकारः
तस्मान्नजौ च नगणत्रयतो गलौ स्तः ।
खण्डैर्नगैर्दशभिरत्र यतिर्विशाला
सा पिङ्गलेन कथिता कमलाऽतिरम्या ॥
वृत्तचन्द्रिका 2. 139] कमला.

शेषजातिः

27 ... (5)

नननभनभनस (13-6) [गतिनगणभनभनसकलितं त्रिपदललितं तदनुयतिमिलितम् Jk. 2. 267] त्रिपदललित.

नसभनतजतसय (7-7-13) [नसभनतजाङ्गी तसयमृदुपाङ्गी लसतीति तद्भङ्गविरतिः त्रिभङ्गी Jk. 2. 268] त्रिभङ्गी.

मततततननयय (11-16) [मतिनायि मालाचित्रं टैः H. 2. 381] मालाचित्र, मालावृत्त.

मभननननननस (4-8-8-7) [मालावृत्तं गतिवसुवसुयति मभ-रसमितन-स-विकसितकुसुमम् Jk. 2. 265] विकसित-कुसुम.

ममतनभमममम (8-11-8) [मालावृत्तं मालावृत्तेष्वथ वसुधूर्जटि-यत्तन्वीतं ख्यातं मौ तनभा मौ म्मौ Jk. 2. 266] मालावृत्त.

28 ... (2)

जरजरजरजरजग [जरौ जरौ जरौ जरौ जगौ क्रमेण चेद्यदा।
तदा भुजङ्गनायको मनोजशेखरं जगौ॥ वृ.चं.] मनोजशेखर.